SKPF Wincompete Test Series 2026 (Test01)

राजस्थान इतिहास (प्राचीन एवं मध्यकालीन)

Test 01 - आंसर की

प्रश्न संख्या	सही विकल्प
1	A
2	B
3	D
4	C
5	D
6	C
7	C
8	C
9	D
10	A
11	D

wincompete

12	A
13	B
14	A
15	C
16	C
17	B
18	A
19	D
20	A

प्रश्न संख्या	सही विकल्प
21	**A**
22	**A**
23	**D**

wincompete

24	**C**
25	**C**
26	**A**
27	**D**
28	**C**
29	**A**
30	**A**
31	**C**
32	**C**
33	**D**
34	**A**
35	**D**
36	**C**
37	**D**

wincompete

38	A
39	D
40	C

प्रश्न संख्या	सही विकल्प
41	D
42	B
43	D
44	A
45	B
46	A
47	D
48	C
49	D

wincompete

50	**B**
51	**D**
52	**C**
53	**D**
54	**A**
55	**C**
56	**C**
57	**A**
58	**A**
59	**D**
60	**C**

wincompete

प्रश्न संख्या	सही विकल्प
61	**D**
62	**A**
63	**B**
64	**C**
65	**D**
66	**A**
67	**C**
68	**C**
69	**D**
70	**B**
71	**D**

wincompete

72	**C**
73	**D**
74	**A**
75	**C**
76	**C**
77	**B**
78	**A**
79	**D**
80	**D**

प्रश्न संख्या	सही विकल्प
81	**D**
82	**D**
83	**A**

wincompete

84	**D**
85	**B**
86	**C**
87	**A**
88	**C**
89	**C**
90	**A**
91	**C**
92	**A**
93	**C**
94	**C**
95	**D**
96	**D**
97	**D**

wincompete

98	**A**
99	**C**
100	**D**

wincompete

SKPF Wincompete Test Series 2026 (Test 01)

राजस्थान इतिहास (प्राचीन एवं मध्यकालीन)

व्याख्या **(Explanations - TEST 01)**

प्रश्न: **1**

सही उत्तर: **A**

व्याख्या: राजस्थान में पुरापाषाण कालीन सभ्यता के अन्वेषण का प्रारंभ 1870 ई. में सी.ए. हैकट द्वारा जयपुर और इन्द्रगढ़ (बूंदी) से हस्त-कुठार प्राप्त करने के साथ हुआ। निम्न पुरापाषाण काल के ये उपकरण मुख्य रूप से 'क्वार्टजाइट' पत्थर के बने थे। जैस्पर, चर्ट और फ्लिंट जैसे बारीक अनाज वाले पत्थरों का उपयोग मध्य पुरापाषाण काल (Middle Paleolithic) की विशेषता है, न कि प्रारंभिक चरण की। अतः कथन 3 असत्य है, जबकि कथन 1 और 2 पूर्णतः सत्य हैं।

प्रश्न: **2**

सही उत्तर: **B**

व्याख्या: भीलवाड़ा जिले में कोठारी नदी के तट पर स्थित बागोर का उत्खनन वी.एन. मिश्र द्वारा किया गया। यहाँ स्थित टीले को 'महासत्यों का टीला' कहा जाता है। यह तथ्य सत्य है कि यहाँ से भारत में पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। हालांकि, 'महासत्यों का टीला' कहे जाने का मुख्य कारण यहाँ के पुरातात्विक जमाव और टीले की संरचना है, न कि केवल पशुपालन। दोनों कथन स्वतंत्र रूप से सत्य हैं, परंतु कारण कथन की पूर्ण व्याख्या नहीं करता।

प्रश्न: **3**

सही उत्तर: **D**

व्याख्या: आहड़ सभ्यता में मकानों के निर्माण में मुख्य रूप से पत्थरों और कच्ची ईंटों का प्रयोग हुआ है। इसके विपरीत, राजसमंद में स्थित गिलुण्ड सभ्यता की सबसे अनूठी विशेषता वहाँ 'पकी हुई ईंटों' (Baked Bricks) के प्रचुर साक्ष्य मिलना है। यह बनास संस्कृति के अन्य स्थलों से इसे अलग करता है। गणेश्वर को 'ताम्रयुगीन सभ्यताओं की जननी' और कालीबंगा को 'जुते हुए खेतों' के लिए प्रसिद्ध माना जाता है, जो ऐतिहासिक रूप से सही हैं।

प्रश्न: **4**

सही उत्तर: **C**

व्याख्या: गणेश्वर (नीम का थाना) से प्राप्त तांबे के उपकरणों में 99% शुद्धता यह सिद्ध करती है कि यहाँ के निवासी धातु शोधन (Refining) की उन्नत तकनीक में दक्ष थे। साथ ही, तांबे के मछली पकड़ने के कांटों की प्रचुरता यह दर्शाती है कि तत्कालीन कांतली नदी में जल की पर्याप्त उपलब्धता थी और मत्स्य पालन/पकड़ना जीविकोपार्जन का प्रमुख साधन था। यह साक्ष्य क्षेत्र की पारिस्थितिकी और निवासियों के कौशल दोनों की पुष्टि करते हैं।

प्रश्न: **5**

सही उत्तर: **D**

व्याख्या: कालीबंगा (हनुमानगढ़) की खुदाई में जल निकासी के लिए 'लकड़ी की नालियों' के साक्ष्य मिले हैं, जो संपूर्ण सिंधु घाटी सभ्यता में अद्वितीय है। यहाँ के घरों के आंगन और दीवारों में दरारें भूकंप के प्राचीनतम साक्ष्य प्रस्तुत करती हैं। चबूतरे पर मिली सात अग्नि वेदिकाएँ (Havan Kund) पशु बलि या अन्य धार्मिक अनुष्ठानों की उपस्थिति को दर्शाती हैं। डॉ. दशरथ शर्मा ने इसे सिंधु साम्राज्य की तीसरी राजधानी माना है।

प्रश्न: **6**

सही उत्तर: **C**

व्याख्या: लूनी नदी घाटी में मध्य-पुरापाषाण कालीन उपकरणों की सघनता के कारण वी.एन. मिश्र ने इसे 'लूनी उद्योग' कहा है। इस काल की विशेषता पत्थरों के प्रकार में बदलाव था; अब क्वार्टजाइट के स्थान पर जैस्पर, चर्ट और फ्लिंट जैसे पत्थरों का उपयोग होने लगा था। कारण कथन में क्वार्टजाइट को प्रधान बताया गया है, जो कि निम्न पुरापाषाण काल की विशेषता है, न कि मध्य पुरापाषाण काल की। अतः कथन सत्य है परंतु कारण गलत है।

प्रश्न: **7**

सही उत्तर: **C**

व्याख्या: राजस्थान के नवीनतम प्रशासनिक पुनर्गठन के अनुसार, 'गणेश्वर' सभ्यता का स्थल अब नीम का थाना जिले के अंतर्गत आता है। पूर्व में यह सीकर जिले का हिस्सा था। इसी प्रकार, डीडवाना अब डीडवाना-कुचामन जिले में, तिलवाड़ा बालोतरा जिले में और सुनारी नीम का थाना जिले में स्थित है। आरपीएससी परीक्षाओं में अब नवीन जिलों से संबंधित प्रश्न पूछे जाने की प्रबल संभावना है, अतः यह अद्यतन अत्यंत महत्वपूर्ण है।

प्रश्न: **8**

सही उत्तर: **C**

व्याख्या: आहड़ सभ्यता में अनाज के भंडारण के लिए मिट्टी के बड़े पात्रों का मिलना जिन्हें 'गोरे व कोठे' कहा जाता था, एक विकसित कृषि समाज और अधिशेष प्रबंधन का प्रतीक है। वहीं, तांबा गलाने की भट्टियों और ताम्र-अयस्क के कचरे की उपस्थिति यह सिद्ध करती है कि आहड़ एक प्रमुख औद्योगिक केंद्र था। यहाँ से निर्मित उपकरण अन्य समकालीन सभ्यताओं को भेजे जाते थे, जो एक सशक्त व्यापारिक तंत्र की ओर संकेत करता है।

प्रश्न: **9**

सही उत्तर: **D**

व्याख्या: उदयपुर स्थित बालाथल सभ्यता का उत्खनन वी.एन. मिश्र के नेतृत्व में हुआ, जहाँ से 11 कमरों वाला एक विशाल दुर्गनुमा भवन मिला है। यहाँ से सूती बुने हुए कपड़े के अवशेष भी मिले हैं। आहड़ के उत्खनन में समाधानों (Burials) से पता चला है कि वहाँ मृतकों को गहनों और कपड़ों के साथ दफनाने की परंपरा थी, जो परलोक में विश्वास को दर्शाती है। ओझियाणा (भीलवाड़ा) भी एक महत्वपूर्ण ताम्रयुगीन स्थल है।

प्रश्न: **10**

सही उत्तर: **A**

व्याख्या: कालीबंगा का नगर नियोजन अत्यंत व्यवस्थित था, जहाँ नगर और दुर्ग दो अलग-अलग रक्षा प्राचीरों (Double Fortification) से घिरे थे। इसकी इसी भव्यता, सुरक्षात्मक प्राचीर और प्रशासनिक ढांचे के साक्ष्यों के आधार पर प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. दशरथ शर्मा ने कालीबंगा को सिंधु घाटी सभ्यता के साम्राज्य की 'तीसरी राजधानी' की संज्ञा दी है। यह मोहनजोदड़ो और हड़प्पा के बाद सबसे महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में उभरा था।

प्रश्न: **11***

सही उत्तर: **D**

व्याख्या: मध्यपाषाण काल (Mesolithic Age) की सबसे प्रमुख विशेषता 'सूक्ष्म पाषाण उपकरण' (Microliths) हैं। इस काल में पत्थर के औजार बहुत छोटे, धारदार और परिष्कृत हो गए थे, जिनका आकार 1 से 5 सेंटीमीटर तक होता था। भारी पत्थरों के बड़े औजार पुरापाषाण काल (Paleolithic) की विशेषता थे। मध्यपाषाण काल में ही मानव ने पहली बार पशुपालन के प्रारंभिक लक्षण प्रदर्शित किए थे, जैसा कि बागोर और तिलवाड़ा के साक्ष्यों से स्पष्ट है।

प्रश्न: **12**

सही उत्तर: **A**

व्याख्या: डीडवाना के समीप 'सिंगी तालाब' का उत्खनन यह प्रमाणित करता है कि यहाँ निम्न पुरापाषाण काल के मानव की उपस्थिति थी, जो इसे राजस्थान के सबसे प्राचीन बसावट केंद्रों में से एक बनाता है। हालांकि, निष्कर्ष 2 गलत है क्योंकि पुरापाषाण कालीन मानव धातु विज्ञान (Metallurgy) से अनभिज्ञ था; वह पूरी तरह से पत्थरों के उपकरणों पर निर्भर था। धातु का ज्ञान मानव को ताम्रपाषाण काल के दौरान बहुत बाद में हुआ।

प्रश्न: **13**

सही उत्तर: **B**

व्याख्या: आहड़ के मृदभांड अपनी विशिष्ट 'लाल और काली' रंग योजना के लिए प्रसिद्ध हैं। इन्हें पकाने के लिए 'उल्टी तपाई' (Inverse Firing) तकनीक का उपयोग किया जाता था, जिससे आंतरिक भाग काला और बाहरी भाग लाल रहता था। इन पर सफेद रंग से लहरिया या ज्यामितीय चित्रण किया जाता था। कालीबंगा के मृदभांडों की तुलना में आहड़ के मृदभांड अधिक मजबूत और मोटे थे। अतः कथन 3 गलत है क्योंकि कालीबंगा के मृदभांड पतले होते थे।

प्रश्न: **14**

सही उत्तर: **A**

व्याख्या: गणेश्वर (नीम का थाना) से प्राप्त तांबे के विशाल भंडार और प्राचीनता (लगभग 2800 ई.पू.) के कारण इसे सभी ताम्रयुगीन सभ्यताओं का मूल केंद्र या 'जननी' माना जाता है। यहाँ से तांबे के बाण, कुल्हाड़ियाँ और अन्य उपकरण हड़प्पा और मोहनजोदड़ो जैसे बड़े केंद्रों को भेजे जाते थे। भौगोलिक रूप से कांतली नदी मार्ग इन केंद्रों तक व्यापार के लिए सुलभ था, जिससे गणेश्वर एक प्रमुख निर्यात केंद्र बन गया था।

प्रश्न: **15**

सही उत्तर: **C**

व्याख्या: कालीबंगा एक 'कांस्ययुगीन' (Bronze Age) सभ्यता थी। यहाँ के लोग तांबे और कांसे के उपयोग से भली-भांति परिचित थे, लेकिन उन्हें 'लोहे' (Iron) का ज्ञान नहीं था। भारत में लोहे का व्यापक प्रयोग उत्तर-वैदिक काल (लगभग 1000 ई.पू.) के आसपास शुरू हुआ। कालीबंगा से ऊँट की हड्डियाँ, स्वास्तिक का चिह्न और जुते हुए खेत जैसे साक्ष्य तो मिले हैं, परंतु लोहे के उपकरणों का मिलना ऐतिहासिक रूप से असंभव है।

प्रश्न: **16**

सही उत्तर: **C**

व्याख्या: बागोर और तिलवाड़ा से प्राप्त साक्ष्य यह स्पष्ट करते हैं कि मध्यपाषाण काल में मानव केवल शिकार पर निर्भर नहीं था, बल्कि उसने भेड़-बकरी जैसे पशुओं को पालतू बनाना शुरू कर दिया था। यह आर्थिक गतिविधियों में एक बड़ा परिवर्तन था, जहाँ मानव खाद्य संग्राहक से धीरे-धीरे खाद्य उत्पादक की ओर बढ़ रहा था। पशुपालन की उपस्थिति स्वाभाविक रूप से दुग्ध उत्पादों के उपयोग की संभावना को पुष्ट करती है।

प्रश्न: **17**

सही उत्तर: **B**

व्याख्या: गिलुण्ड, बनास नदी के किनारे स्थित एक महत्वपूर्ण स्थल है। यहाँ से पकी हुई ईंटों का उपयोग मिला है, जो आहड़ में अनुपस्थित था (आहड़ में पत्थर अधिक प्रयुक्त थे)। गिलुण्ड से प्राप्त मृदभांडों पर 'काले रंग' के चित्रण की प्रधानता है, न कि भूरे रंग की। यह स्थल आहड़ संस्कृति के क्षेत्रीय विस्तार और उसकी तकनीकी भिन्नता को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

प्रश्न: **18**

सही उत्तर: **A**

व्याख्या: आहड़ सभ्यता का मुख्य केंद्र उदयपुर की आयड़ (बेड़च) नदी घाटी थी, जो आगे चलकर बनास नदी में मिल जाती है। आहड़ के समान सांस्कृतिक लक्षण बनास नदी के किनारे स्थित गिलुण्ड और अन्य 50 से अधिक स्थलों पर पाए गए हैं। इसी भौगोलिक और सांस्कृतिक व्यापकता के कारण प्रसिद्ध पुरातत्वविद् एच.डी. सांकलिया ने आहड़ सभ्यता को 'बनास संस्कृति' (Banas Culture) के नाम से संबोधित किया है।

प्रश्न: **19**

सही उत्तर: **D**

व्याख्या: कालीबंगा की खोज अमलानंद घोष (1952) ने की थी। आहड़ का प्रथम उत्खनन अक्षय कीर्ति व्यास (1953) ने किया। बागोर का उत्खनन वी.एन. मिश्र (1967-70) द्वारा किया गया। गणेश्वर सभ्यता की खोज और उत्खनन का श्रेय 'रतन चंद्र अग्रवाल' (R.C. Agrawal) को जाता है, न कि अमलानंद घोष को। आर.सी. अग्रवाल ने 1972-77 के दौरान गणेश्वर के महत्व को दुनिया के सामने रखा था।

प्रश्न: **20**

सही उत्तर: **A**

व्याख्या: भू-वैज्ञानिक और पुरातात्विक साक्ष्य संकेत देते हैं कि प्राचीन सरस्वती (घग्घर) नदी के सूखने या मार्ग परिवर्तन से कालीबंगा जैसी बस्तियों का पारिस्थितिक आधार नष्ट हो गया। जल की कमी और बार-बार आने वाली बाढ़ या भूकंप ने इन सभ्यताओं के पतन में भूमिका निभाई। निष्कर्ष 2 गलत है क्योंकि राजस्थान का मरुस्थलीकरण एक दीर्घकालिक प्रक्रिया है जिसका संबंध प्रागैतिहासिक जल-निकासी तंत्र के विनाश से गहरा जुड़ा हुआ है।

प्रश्न: **21**

सही उत्तर: **A**

व्याख्या: बैराठ (विराट नगर) की 'बीजक की पहाड़ी' से 1837 ई. में कैप्टन बर्ट ने सम्राट अशोक का 'भाब्रू शिलालेख' खोजा था। इस शिलालेख में अशोक ने स्वयं को 'लाजा मागधे' (मगध का राजा) कहा है और बौद्ध त्रिरत्न (बुद्ध, धम्म, संघ) के प्रति श्रद्धा व्यक्त की है। यह शिलालेख वर्तमान में जयपुर में नहीं, बल्कि 'एशियाटिक सोसाइटी, कोलकाता' के संग्रहालय में सुरक्षित है। अतः कथन 3 असत्य होने के कारण सही विकल्प 'A' है।

प्रश्न: **22**

सही उत्तर: **A**

व्याख्या: टोंक जिले की ढील नदी के तट पर स्थित रैढ़ को 'प्राचीन भारत का टाटा नगर' की संज्ञा दी गई है। इसका मुख्य कारण यहाँ उत्खनन में लोहे के उपकरणों और हथियारों का विशाल भंडार मिलना है। इसके अतिरिक्त, यहाँ से 3075 चांदी के आहत (पंचमार्क) सिक्के प्राप्त हुए हैं, जो किसी भी एक स्थल से प्राप्त प्राचीन सिक्कों का सबसे बड़ा भंडार है। यह इसकी आर्थिक समृद्धि और व्यापारिक महत्व की पुष्टि करता है।

प्रश्न: **23**

सही उत्तर: **D**

व्याख्या: नलियासर (सांभर) का संबंध मुख्य रूप से कुषाण, गुप्त और प्रतिहार काल से है। यहाँ से कुषाण शासक हुविष्क के सिक्के और गुप्तकालीन मृण्मूर्तियाँ मिली हैं। 'मौर्य कालीन बौद्ध स्तूप' और 'शंख लिपि' के विशिष्ट साक्ष्य बैराठ (विराट नगर) से प्राप्त हुए हैं, न कि नलियासर से। सुनारी से लोहे की भट्टियाँ, नोह से यक्ष प्रतिमा और नगरी से शिबि सिक्के मिलना ऐतिहासिक रूप से प्रमाणित तथ्य हैं।

प्रश्न: **24**

सही उत्तर: **C**

व्याख्या: चीनी यात्री ह्वेनसांग ने 7वीं शताब्दी में बैराठ का भ्रमण किया और यहाँ 8 सक्रिय बौद्ध मठों का वर्णन किया। ऐतिहासिक साक्ष्य बताते हैं कि हूण आक्रांता मिहिरकुल ने इन मठों और मंदिरों को भारी क्षति पहुँचाई थी। यह घटनाक्रम सिद्ध करता है कि बैराठ बौद्ध संस्कृति का एक प्रमुख केंद्र था और हूणों के बर्बर आक्रमणों ने राजस्थान में बौद्ध धर्म के संगठित ढांचे को कमजोर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्रश्न: **25**

सही उत्तर: **C**

व्याख्या: 'नगर' (टोंक) मालव जनपद का मुख्य केंद्र था, जबकि मध्यमिया (चित्तौड़गढ़) शिबि जनपद की राजधानी थी। कथन 3 गलत है क्योंकि ये जनपद 'गणतंत्रीय' या 'जनपदों के संघ' पर आधारित व्यवस्था थे, न कि विशुद्ध राजतंत्रीय। इन जनपदों ने शक और कुषाण जैसे विदेशी आक्रमणकारियों का सफलतापूर्वक मुकाबला किया था, जिसका प्रमाण इनके द्वारा जारी किए गए विजय-सूचक सिक्कों ('मालवानां जयः') से प्राप्त होता है।

प्रश्न: **26**

सही उत्तर: **A**

व्याख्या: चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित नगरी (मध्यमिका) के निकट 'घोसुण्डी' गाँव से दूसरी शताब्दी ई.पू. का एक महत्वपूर्ण शिलालेख प्राप्त हुआ है। यह राजस्थान का सबसे प्राचीन अभिलेख है जिसमें 'भागवत संप्रदाय' या 'वैष्णव धर्म' के सिद्धांतों और पूजा का उल्लेख मिलता है। इसमें 'संकर्षण' और 'वासुदेव' के मंदिर निर्माण की जानकारी दी गई है। यह शिलालेख सिद्ध करता है कि राजस्थान में वैष्णव धर्म का प्रसार प्राचीन काल से ही हो चुका था।

प्रश्न: **27**

सही उत्तर: **D**

व्याख्या: बैराठ का उत्खनन सर्वप्रथम दयाराम साहनी (1936-37) ने किया। रैढ़ का उत्खनन के.एन. पुरी ने किया और मध्यमिया (नगरी) का उत्खनन डॉ. डी.आर. भण्डारकर ने 1904 ई. में किया था। भीनमाल (जालौर) के उत्खनन का श्रेय 'रतन चंद्र अग्रवाल' (R.C. Agrawal) को जाता है। अमलानंद घोष का मुख्य योगदान कालीबंगा (हनुमानगढ़) की खोज और उत्खनन में रहा है। अतः विकल्प 'D' असंगत है।

प्रश्न: **28**

सही उत्तर: **C**

व्याख्या: बैराठ की 'बीजक की पहाड़ी' से प्राप्त अवशेषों में एक गोलाकार मंदिर (चैत्य) मिला है, जिसे भारत के प्राचीनतम बौद्ध मंदिरों में गिना जाता है। यह मौर्य कालीन स्थापत्य का बेजोड़ नमूना है, जिसमें प्रयुक्त ईंटें और डिजाइन अशोक के काल की वास्तुकला की पुष्टि करते हैं। यह स्थल न केवल धार्मिक महत्व रखता है, बल्कि भारत में मंदिर निर्माण कला की विकास यात्रा को समझने के लिए भी एक आधारभूत केंद्र माना जाता है।

प्रश्न: **29**

सही उत्तर: **A**

व्याख्या: राजस्थान के नवीन प्रशासनिक ढाँचे के अनुसार बैराठ अब कोटपूतली-बहरोड़ जिले में आता है। नलियासर (सांभर) अब जयपुर ग्रामीण जिले का हिस्सा है। सुनारी सभ्यता का स्थल, जो कांतली नदी के तट पर है, अब नवीन जिले 'नीम का थाना' के अंतर्गत आता है, न कि सीकर में। परीक्षा की दृष्टि से इन नवीन जिलों का मिलान अत्यंत महत्वपूर्ण है। कथन 3 गलत होने के कारण सही उत्तर विकल्प 'A' है।

प्रश्न: **30**

सही उत्तर: **A**

व्याख्या: रैढ़ (टोंक) के उत्खनन में भवनों के भीतर घेरादार कुएं (Ring Wells) मिले हैं, जो उस समय की जल निकासी और स्वच्छता व्यवस्था की उच्च कोटि को दर्शाते हैं। ये 'रिंग वेल्स' अक्सर गंदे पानी के निकास या सोखते गड्ढे के रूप में प्रयुक्त होते थे। यह विशेषता रैढ़ को एक सुनियोजित और विकसित नगरीय केंद्र के रूप में स्थापित करती है, जो तत्कालीन उत्तर भारत के प्रमुख शहरों के समकक्ष था।

प्रश्न: **31**

सही उत्तर: **C**

व्याख्या: बैराठ से बड़ी मात्रा में पत्थरों पर खुदी हुई 'शंख लिपि' के प्रमाण मिले हैं। यह लिपि अपनी शंखाकार आकृति के कारण प्रसिद्ध है, लेकिन विडंबना यह है कि आधुनिक विद्वान और पुरालिपि शास्त्री इसे अभी तक सफलतापूर्वक पढ़ने में असमर्थ रहे हैं। यह अभी भी एक ऐतिहासिक रहस्य बनी हुई है। अन्य कथन जैसे नोह के क्रमिक अवशेष और भीनमाल का उपनाम 'पी-लो-मो-लो' ऐतिहासिक रूप से सत्य हैं।

प्रश्न: **32**

सही उत्तर: **C**

व्याख्या: टोंक जिले के नगर (कर्कोट नगर) से 6000 से अधिक मालव सिक्के मिले हैं, जिन पर 'मालव गण' की विजय के नारे अंकित हैं। रैढ़ से प्राप्त सिक्कों और हथियारों का भंडार इस गणराज्य की सुदृढ़ सैन्य और व्यापारिक स्थिति को दर्शाता है। ये साक्ष्य निष्कर्ष निकालते हैं कि मालव जनपद केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं थी, बल्कि एक सुसंगठित और स्वाभिमानी गणराज्य था जिसने तत्कालीन राजस्थान की राजनीति को गहराई से प्रभावित किया।

प्रश्न: **33**

सही उत्तर: **D**

व्याख्या: जयपुर ग्रामीण जिले में स्थित नलियासर (सांभर) का ऐतिहासिक महत्व बहुआयामी है। यहाँ से प्राप्त कुषाण शासक हुविष्क के सिक्के और गुप्तकालीन कलाकृतियाँ इसके मौर्योत्तर एवं गुप्तकालीन विकास को प्रमाणित करती हैं। इस स्थल का उत्खनन दयाराम साहनी और कर्नल हेंडले के निर्देशन में हुआ था, जिसमें प्राचीन चौहान शासन से पूर्व की बस्तियों के अवशेष भी मिले हैं। यह स्थल सांभर क्षेत्र की प्राचीनता का मुख्य साक्ष्य है।

प्रश्न: **34**

सही उत्तर: **A**

व्याख्या: बैराठ (विराट नगर) ऐतिहासिक और पौराणिक दोनों दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यह मत्स्य जनपद की राजधानी था। महाभारत के अनुसार, पांडवों ने अपने 13वें वर्ष का अज्ञातवास यहाँ के राजा विराट के महल में वेश बदलकर बिताया था। यहाँ भीम की डूंगरी और पांडुपोल जैसे स्थल आज भी जनश्रुतियों में प्रचलित हैं। सम्राट अशोक ने भी इसके सामरिक और धार्मिक महत्व को देखते हुए यहाँ अपने शिलालेख उत्कीर्ण करवाए थे।

प्रश्न: **35**

सही उत्तर: **D**

व्याख्या: मौर्य काल के पतन के बाद राजस्थान में किसी एक केंद्रीय सत्ता की स्थापना नहीं हुई थी। इसके विपरीत, यहाँ मालव, शिबि, यौधेय और अर्जुनयन जैसे कई स्वतंत्र गणराज्यों और जनपदों का उदय हुआ। इन स्थानीय शक्तियों ने अपनी स्वायत्तता बनाए रखी और विदेशी शक-कुषाण आक्रमणों के विरुद्ध संघर्ष किया। मध्यमिका (नगरी) का व्यापारिक मार्गों पर स्थित होना इसकी आर्थिक मजबूती का मुख्य कारण था। अतः विकल्प 'D' गलत है।

प्रश्न: **36**

सही उत्तर: **C**

व्याख्या: भाब्रू शिलालेख अशोक के व्यक्तिगत धर्म परिवर्तन का सबसे बड़ा प्रमाण है, क्योंकि इसमें वह स्पष्ट रूप से 'बुद्ध, धम्म, संघ' में विश्वास प्रकट करता है। यह केवल एक धार्मिक घोषणा नहीं थी, बल्कि बैराठ में बौद्ध स्तूपों और विहारों का निर्माण मौर्य प्रशासन द्वारा इस क्षेत्र को एक बड़े सांस्कृतिक केंद्र के रूप में विकसित करने की योजना का हिस्सा था। अतः दोनों निष्कर्ष कथन की सही पुष्टि करते हैं।

प्रश्न: **37**

सही उत्तर: **D**

व्याख्या: राजस्थान के प्राचीन केंद्र विविध क्षेत्रों में अग्रणी थे। बैराठ बौद्ध धर्म का प्रमुख केंद्र था, जबकि रैढ़ अपनी सिक्कों की प्रचुरता और लोहे के काम के कारण 'टाटा नगर' कहलाया। सुनारी लोहे के शोधन का प्राचीनतम केंद्र था। भीनमाल गुप्तकाल के बाद महान गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त और प्रसिद्ध कवि माघ (शिशुपालवध के रचयिता) की कर्मभूमि के रूप में विख्यात हुआ। ये तीनों कथन इन केंद्रों की बहुआयामी प्रगति को दर्शाते हैं।

प्रश्न: **38**

सही उत्तर: **A**

व्याख्या: राजस्थान के जनपदीय सिक्के इतिहास लेखन के प्राथमिक स्रोत हैं। इन सिक्कों पर अंकित 'मालवानां जयः' (मालवों की जय हो) जैसे नारों से पता चलता है कि वे गणराज्य अपनी विजय का जश्न सिक्कों के माध्यम से मनाते थे। इन सिक्कों की धातु, बनावट और प्राप्ति स्थान से उस काल की आर्थिक स्थिति, जनपदों की सीमाओं और उनकी संप्रभुता का सटीक अनुमान लगाया जा सकता है। कारण कथन की पूर्ण व्याख्या करता है।

प्रश्न: **39**

सही उत्तर: **D**

व्याख्या: रैढ़ को लोहे की प्रचुरता के कारण 'टाटा नगर' कहा जाता है। बैराठ मौर्य और बौद्ध संस्कृति का संगम स्थल है। भीनमाल (श्रीमाल) कवि माघ की जन्मभूमि और ह्वेनसांग का यात्रा केंद्र रहा है। सुनारी (नीम का थाना) एक लोहयुगीन सभ्यता स्थल है जहाँ से लोहे की भट्टियाँ मिली हैं। शिबि जनपद की राजधानी 'मध्यमिका' (नगरी, चित्तौड़गढ़) थी, न कि सुनारी। अतः विकल्प 'D' असंगत है।

प्रश्न: **40**

सही उत्तर: **C**

व्याख्या: मौर्य साम्राज्य के कमजोर होते ही राजस्थान के प्राचीन जनपदों ने पुनः अपनी स्वतंत्र पहचान कायम कर ली। मालव और यौधेय जैसे गणराज्यों ने न केवल अपनी राजनीतिक स्वायत्तता प्राप्त की, बल्कि उन्होंने उत्तर-पश्चिमी भारत से विदेशी शक्तियों (जैसे कुषाणों) के प्रभाव को कम करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह पुनरुत्थान राजस्थान की स्थानीय नेतृत्व क्षमता और वीरता का परिचायक है, जिसका प्रमाण तत्कालीन सिक्कों और स्तंभ लेखों से मिलता है।

प्रश्न: **41**

सही उत्तर: **D**

व्याख्या: बप्पा रावल मेवाड़ के गुहिल वंश के प्रथम प्रतापी शासक थे। उन्होंने 734 ई. में चित्तौड़ के मानमोरी को हराकर गुहिल सत्ता सुदृढ़ की। उन्होंने नागदा को राजधानी बनाया और वहाँ के अधिष्ठाता देव एकलिंगजी का मंदिर बनवाया। बप्पा रावल राजस्थान के पहले शासक थे जिन्होंने सोने के सिक्के चलाए, जिसका वजन 115 ग्रेन था। सिक्कों पर कामधेनु, बछड़ा और शिवलिंग के चित्र अंकित थे।

wincompete

प्रश्न: **42**

सही उत्तर: **B**

व्याख्या: अल्लट ने मेवाड़ में संगठित प्रशासनिक व्यवस्था की नींव रखी, जिसे प्रथम 'नौकरशाही' कहा जाता है। उन्होंने आहड़ को राजधानी बनाकर व्यापारिक रूप से समृद्ध किया। हरिया देवी (हूण राजकुमारी) से उनका विवाह राजस्थान का पहला ज्ञात अंतर्राष्ट्रीय

विवाह है। हालाँकि दोनों कथन सत्य हैं, लेकिन आहड़ को राजधानी बनाना और विवाह करना सीधे तौर पर नौकरशाही के गठन का 'कारण' नहीं है, बल्कि ये उनकी अन्य उपलब्धियां हैं।

प्रश्न: **43**

सही उत्तर: **D**

व्याख्या: नागभट्ट द्वितीय को अरबों को रोकने के कारण 'नारायण' और 'मलेच्छों का नाशक' कहा गया। वत्सराज को 'रणहस्तिन' और मिहिर भोज को 'आदिवराह' कहा जाता है। अरब यात्री सुलेमान ने मिहिर भोज को 'इस्लाम का शत्रु' और 'काफिरों का राजा' कहा था, न कि नागभट्ट द्वितीय को। मिहिर भोज की सैन्य शक्ति और घोड़ों की श्रेष्ठता की प्रशंसा भी सुलेमान ने अपने यात्रा वृत्तांत में की थी।

प्रश्न: **44**

सही उत्तर: **A**

व्याख्या: 1227 ई. में भूताला (उदयपुर) के युद्ध में जैत्रसिंह ने इल्तुतमिश को पीछे हटने पर मजबूर कर दिया। लेकिन पीछे हटती तुर्क सेना ने नागदा को पूरी तरह नष्ट कर दिया। इसके कारण जैत्रसिंह ने राजधानी को नागदा से हटाकर सामरिक दृष्टि से सुरक्षित 'चित्तौड़ दुर्ग' में स्थानांतरित कर दिया। निष्कर्ष 2 गलत है क्योंकि इस युद्ध के बाद भी दिल्ली सल्तनत और मेवाड़ के बीच संघर्ष निरंतर जारी रहा था।

प्रश्न: **45**

सही उत्तर: **B**

व्याख्या: त्रिपक्षीय संघर्ष कन्नौज पर नियंत्रण के लिए आठवीं शताब्दी में शुरू हुआ। प्रतिहार शासक वत्सराज ने पाल शासक धर्मपाल को हराकर इसकी शुरुआत की। यह संघर्ष लगभग 100 वर्षों से अधिक समय तक चला। निष्कर्ष 3 गलत है क्योंकि अंततः राष्ट्रकूटों ने नहीं, बल्कि गुर्जर-प्रतिहारों ने कन्नौज पर स्थाई विजय प्राप्त की और उसे अपनी राजधानी बनाया (नागभट्ट द्वितीय के समय)।

प्रश्न: **46**

सही उत्तर: **A**

व्याख्या: मिहिर भोज प्रतिहार वंश के सर्वाधिक शक्तिशाली शासक थे। उनके समय साम्राज्य का विस्तार उत्तर में हिमालय की तराई से दक्षिण में नर्मदा तक और पूर्व में बंगाल से पश्चिम में सौराष्ट्र तक था। उन्होंने कन्नौज को अपनी सत्ता का केंद्र बनाकर अरब आक्रमणकारियों के लिए एक अभेद्य दीवार खड़ी की। सुलेमान के अनुसार, उनके पास अरबों को रोकने के लिए विशाल घुड़सवार सेना थी, जो उनकी श्रेष्ठता का आधार थी।

प्रश्न: **47**

सही उत्तर: **D**

व्याख्या: गुहिलों की उत्पत्ति विवादित है। अबुल फजल इन्हें ईरानी मानते हैं, टॉड वल्लभी के शिलादित्य से जोड़ते हैं और डॉ. गोपीनाथ शर्मा इन्हें 'विप्र' (ब्राह्मण) मानते हैं। मुहणोत नैणसी ने गुहिलों की 24 शाखाओं का उल्लेख किया है और उन्हें 'सूर्यवंशी क्षत्रिय' माना है। विकल्प D में कहा गया है कि उन्होंने खंडन किया, जो असत्य है; नैणसी ने तो इनकी सूर्यवंशी होने की पुष्टि की थी।

प्रश्न: **48**

सही उत्तर: **C**

wincompete

व्याख्या: नागभट्ट द्वितीय ने कन्नौज के चक्रायुध को हराकर प्रतिहारों की प्रतिष्ठा को अखिल भारतीय स्तर पर पहुँचाया। कन्नौज उस समय भारत की शक्ति का केंद्र माना जाता था। इस विजय के साथ ही प्रतिहारों का नियंत्रण गंगा की उपजाऊ घाटी पर हो गया, जिससे राज्य की आर्थिक और सैन्य शक्ति में वृद्धि हुई। यह प्रतिहारों के 'स्वर्ण युग' की प्रस्तावना थी जिसने मिहिर भोज के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

प्रश्न: **49**

सही उत्तर: **D**

व्याख्या: गुर्जर-प्रतिहार शासक कला के महान संरक्षक थे। उनके समय विकसित 'महामारु' या गुर्जर-प्रतिहार शैली में मंदिरों का निर्माण ऊंचे चबूतरे पर किया जाता था। ओसियां के मंदिर, चित्तौड़ का कालिका माता मंदिर, और आभानेरी के अवशेष इस शैली के जीवंत उदाहरण हैं। यह शैली राजस्थान के साथ-साथ उत्तरी भारत के अन्य हिस्सों में भी फैली। आभानेरी की चाँद बावड़ी अपनी ज्यामितीय सुंदरता के लिए विश्व प्रसिद्ध है।

प्रश्न: **50**

सही उत्तर: **B**

व्याख्या: 1303 ई. में रावल रतन सिंह की मृत्यु और चित्तौड़ के पतन के साथ ही 'रावल' शाखा का अंत हुआ। अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ का नाम बदलकर 'खिज्राबाद' किया, यह भी सत्य है। लेकिन शाखा के अंत का 'कारण' खिज्राबाद नाम रखना नहीं, बल्कि रतन सिंह का वीरगति को प्राप्त होना और कोई उत्तराधिकारी न बचना था। अतः कथन और कारण दोनों स्वतंत्र रूप से सत्य हैं, पर व्याख्या सही नहीं है।

प्रश्न: **51**

सही उत्तर: **D**

व्याख्या: प्रतिहारों की प्रशासनिक व्यवस्था मुगलों से पूर्व की सबसे सुव्यवस्थित व्यवस्था थी। बलाधिकृत सेना का प्रमुख था और दाण्डपाशिक पुलिस प्रमुख। 'उपरिक' वास्तव में प्रांत (भुक्ति) का गवर्नर या प्रशासक होता था, न कि गाँव का अधिकारी। गाँव के मुख्य अधिकारी को 'ग्रामपति' या 'महत्तर' कहा जाता था। महासामंत बड़े जागीरदारों या सैन्य कमांडरों को दी जाने वाली उपाधि थी।

प्रश्न: **52**

सही उत्तर: **C**

व्याख्या: वत्सराज के काल में साहित्य की अभूतपूर्व प्रगति हुई। उद्योतन सूरी ने 778 ई. में जालोर में बैठकर 'कुवलयमाला' की रचना की, जो तत्कालीन जन-जीवन और बोलियों (मरुवाणी सहित) पर प्रकाश डालती है। जिनसेन ने 'हरिवंश पुराण' लिखकर धार्मिक साहित्य को समृद्ध किया। ये रचनाएं सिद्ध करती हैं कि प्रतिहार काल में जैन धर्म और विद्वानों को राजकीय समर्थन प्राप्त था, जिससे सांस्कृतिक विकास को गति मिली।

प्रश्न: **53**

सही उत्तर: **D**

व्याख्या: रावल रतन सिंह का शासनकाल संक्षिप्त (1302-1303 ई.) था, लेकिन अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। चित्तौड़ के प्रथम साके में रानी पद्मिनी के नेतृत्व में 16,000 महिलाओं ने जौहर किया। गोरा और बादल की वीरता आज भी मेवाड़ के शौर्य गीतों में जीवित है। जायसी ने 1540 ई. में 'पद्मावत' लिखकर इस घटना को साहित्यिक अमरता प्रदान की, हालांकि इसमें कुछ काल्पनिक तत्व भी सम्मिलित किए गए हैं।

प्रश्न: **54**

सही उत्तर: **A**

wincompete

व्याख्या: मेवाड़ राजवंश की यह अनूठी परंपरा थी कि वे स्वयं को राजा न मानकर भगवान शिव (एकलिंगजी) का 'दीवान' या प्रतिनिधि मानते थे। जब भी राजा राजधानी छोड़ते थे, वे एकलिंगजी से 'आसका' (अनुमति) लेते थे। यह व्यवस्था शासक को निरंकुश होने से रोकती थी और प्रजा के मन में धर्म के प्रति गहरी आस्था उत्पन्न करती थी। यह 'लोकतांत्रिक राजतंत्र' का एक प्राचीन आध्यात्मिक स्वरूप था।

प्रश्न: **55**

सही उत्तर: **C**

व्याख्या: मण्डोर प्रतिहारों की मूल शाखा थी। नागभट्ट प्रथम ने विस्तार हेतु मेड़ता को राजधानी बनाया। बाउक और कक्कुका के शिलालेखों (घटियाला शिलालेख) से इस वंश की उपलब्धियों का पता चलता है। विकल्प C गलत है क्योंकि मण्डोर की इस शाखा का प्रभाव 14वीं शताब्दी के आसपास क्षीण हो गया था और बाद में राव चूड़ा (राठौड़) को यह दुर्ग दहेज में मिला था; मुगलों के समय तक यह शाखा स्वतंत्र नहीं रही थी।

प्रश्न: **56**

सही उत्तर: **C**

व्याख्या: 'प्रतिहार' शब्द का अर्थ है रक्षक या द्वारपाल। 8वीं से 10वीं शताब्दी के मध्य जब अरबों ने सिंध के रास्ते भारत पर आक्रमण किए, तब प्रतिहारों ने उन्हें राजस्थान की सीमाओं पर ही रोक दिया। यदि प्रतिहार शक्ति ढाल बनकर खड़ी न होती, तो भारतीय संस्कृति और मंदिरों को पहले ही क्षति पहुँच सकती थी। इसी कारण इतिहासकारों ने उन्हें 'हिंदुस्तान की सीमाओं का सजग पहरेदार' कहा है।

प्रश्न: **57**

सही उत्तर: **A**

व्याख्या: मेवाड़ के गुहिलों ने सुरक्षा और सुविधा के अनुसार राजधानियां बदलीं। बप्पा रावल के समय नागदा राजधानी थी। अल्लट ने व्यापारिक महत्व के कारण आहड़ को चुना। जैत्रसिंह ने इल्तुतमिश के आक्रमण के बाद नागदा के नष्ट होने पर सुरक्षित चित्तौड़गढ़ को राजधानी बनाया। अंततः 1559 ई. में उदयसिंह ने मुगलों से सुरक्षा हेतु पहाड़ों के बीच उदयपुर नगर बसाकर उसे राजधानी बनाया।

प्रश्न: **58**

सही उत्तर: **A**

व्याख्या: जैत्रसिंह (1213-1253 ई.) मेवाड़ के एक अत्यंत दूरदर्शी शासक थे। उन्होंने सल्तनत काल के सबसे शक्तिशाली सुल्तानों में से एक इल्तुतमिश को हराकर अपनी सैन्य श्रेष्ठता सिद्ध की। उनके काल में मेवाड़ की सीमाएं विस्तृत हुईं और कला-साहित्य को भी बढ़ावा मिला। इसी सैन्य विजय और प्रशासनिक स्थिरता के कारण डॉ. दशरथ शर्मा ने उनके शासन को 'स्वर्णकाल' की संज्ञा दी है।

प्रश्न: **59**

सही उत्तर: **D**

व्याख्या: प्रतिहारों के पतन के कई कारण थे, जिनमें राष्ट्रकूटों के आक्रमण और सामंतों का विद्रोह मुख्य थे। महमूद गजनवी का 1018 ई. का आक्रमण अंतिम चोट साबित हुआ। विकल्प D गलत है क्योंकि प्रतिहारों की वास्तविक शक्ति उनकी **'**घुड़सवार सेना**'** (Cavalry) ही थी। अरब यात्रियों ने भी माना है कि प्रतिहारों के पास सर्वोत्तम नस्ल के अरबी घोड़े और श्रेष्ठ अश्वारोही सेना थी, न कि केवल पैदल सेना।

प्रश्न: **60**

सही उत्तर: **C**

व्याख्या: ग्वालियर प्रशस्ति में प्रतिहारों को राम के भाई लक्ष्मण का वंशज बताया गया है। मध्यकाल में अधिकांश राजपूत राजवंशों ने अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा (Social Status) बढ़ाने के लिए अपनी जड़ों को पौराणिक कथाओं और सूर्यवंश/चंद्रवंश से जोड़ा। यह न केवल वैधता (Legitimacy) प्राप्त करने का तरीका था, बल्कि युद्ध कौशल और वीरता के आदर्शों को पौराणिक नायकों से जोड़ने का एक प्रयास भी था।

wincompete

प्रश्न: **61**

सही उत्तर: **D**

व्याख्या: चौहानों की उत्पत्ति के विषय में विभिन्न मत प्रचलित हैं। चंद्रबरदाई की 'पृथ्वीराज रासो' के अनुसार वे अग्निकुंड से उत्पन्न चार योद्धाओं (परमार, प्रतिहार, चालुक्य, चौहान) में से एक थे। इसके विपरीत 1170 ई. का बिजोलिया शिलालेख उन्हें 'वत्सगोत्रीय ब्राह्मण' (विप्र) बताता है। पृथ्वीराज III के दरबार में जयानक (पृथ्वीराज विजय के रचयिता) और चंद्रबरदाई (पृथ्वीराज रासो) जैसे महान विद्वान थे, जिन्होंने उनके शौर्य को साहित्यिक अमरता प्रदान की। ये तीनों कथन ऐतिहासिक रूप से सत्य हैं।

प्रश्न: **62**

सही उत्तर: **A**

व्याख्या: अजमेर का 'अढाई दिन का झोंपड़ा' मूलतः एक भव्य संस्कृत पाठशाला थी, जिसे चौहान सम्राट विग्रहराज IV (बीसलदेव) ने बनवाया था। इसका नाम 'सरस्वती कंठाभरण' विद्यालय था। कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1194 ई. में इसे नष्ट कर मस्जिद का रूप दे दिया। आज भी इस मस्जिद के खंभों पर उस प्राचीन पाठशाला के अवशेष और विग्रहराज द्वारा रचित 'हरिकेली' नाटक की कुछ पंक्तियाँ उत्कीर्ण देखी जा सकती हैं। कथन और कारण दोनों सत्य हैं और व्याख्या सही है।

प्रश्न: **63**

सही उत्तर: **B**

व्याख्या: राजस्थान के नवीन प्रशासनिक पुनर्गठन के अनुसार, जालौर जिला विभाजित होकर सांचौर जिला बना है, लेकिन ऐतिहासिक 'जालौर दुर्ग' वर्तमान में भी जालौर जिले के अंतर्गत ही स्थित है, न कि सांचौर में। अन्य विकल्प सही हैं: बैराठ अब कोटपूतली-बहरोड़ जिले में है, रणथंभौर सवाई माधोपुर में ही स्थित है और सांभर (नलियासर) अब जयपुर ग्रामीण जिले का हिस्सा है। परीक्षा की दृष्टि से यह अद्यतन अत्यंत महत्वपूर्ण है।

प्रश्न: **64**

सही उत्तर: **C**

व्याख्या: तराइन का द्वितीय युद्ध (1192 ई.) भारतीय इतिहास का एक निर्णायक मोड़ था। पृथ्वीराज III की हार के बाद भारत में केंद्रीय राजपूत सत्ता कमजोर हो गई और तुर्क शासन की नींव पड़ी। निष्कर्ष 1 सही है क्योंकि अजमेर से चौहानों का मुख्य केंद्र समाप्त हो गया। निष्कर्ष 2 भी सही है क्योंकि कन्नौज के जयचंद गढ़वाल और अन्य राजपूत राजाओं के साथ पृथ्वीराज के तनावपूर्ण संबंधों ने उन्हें युद्ध में अकेला कर दिया था, जिसका गौरी ने लाभ उठाया।

प्रश्न: **65**

सही उत्तर: **D**

व्याख्या: रणथंभौर के शासक हम्मीर देव अपनी हठ और शरणागत की रक्षा के लिए प्रसिद्ध थे। उन्होंने अलाउद्दीन खिलजी के विद्रोही मंगोल सेनापति मुहम्मद शाह को शरण दी, जो युद्ध का तात्कालिक कारण बना। हम्मीर ने अपने शासनकाल में 17 युद्ध लड़े, जिनमें से 16 में विजयी रहे। 1301 ई. में अलाउद्दीन के आक्रमण के दौरान हम्मीर के सेनापति रणमल और रतिपाल के विश्वासघात के कारण दुर्ग का पतन हुआ और राजस्थान का प्रथम साका संपन्न हुआ।

प्रश्न: **66**

सही उत्तर: **A**

व्याख्या: 1299 ई. में जब अलाउद्दीन खिलजी की सेना गुजरात के सोमनाथ मंदिर को लूटने जा रही थी, तब जालौर के शासक कान्हड़देव ने उसे अपनी सीमा से गुजरने से मना कर दिया था। कान्हड़देव एक धर्मनिष्ठ शासक थे और वे हिंदू मंदिरों के विध्वंस के साक्षी नहीं बनना चाहते थे। यही घटनाक्रम आगे चलकर जालौर और दिल्ली सल्तनत के बीच दीर्घकालीन संघर्ष और 1311 ई. के जालौर युद्ध का मुख्य कारण बना।

प्रश्न: **67**

सही उत्तर: **C**

व्याख्या: आबू के परमारों की स्थापना धूमराज ने की थी और यहाँ का सबसे प्रतापी शासक धारावर्ष परमार था। विकल्प C गलत है क्योंकि धारावर्ष जालौर के नहीं बल्कि आबू के परमार राजवंश के शासक थे। वागड़ (डूंगरपुर-बांसवाड़ा) के परमारों की राजधानी अर्थूणा थी। मालवा के प्रसिद्ध राजा भोज ने चित्तौड़गढ़ में 'त्रिभुवन नारायण मंदिर' बनवाया था। परमारों का प्रभाव क्षेत्र आबू, जालौर, वागड़ और मालवा तक विस्तृत था।

प्रश्न: **68**

सही उत्तर: **C**

व्याख्या: धारावर्ष परमार आबू के परमार वंश के सबसे प्रतापी राजा थे। उनके बारे में कहा जाता था कि वे शब्द सुनकर बाण चलाने (शब्दभेदी) में निपुण थे। उन्होंने गुजरात के चालुक्य राजाओं के साथ मिलकर तुर्क आक्रमणकारियों (मुहम्मद गौरी की सेना) को पराजित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह सिद्ध करता है कि परमार शासक केवल मंदिरों के निर्माण तक सीमित नहीं थे, बल्कि वे एक कुशल सैन्य शक्ति भी थे।

प्रश्न: **69**

सही उत्तर: **D**

व्याख्या: विग्रहराज IV का शासनकाल चौहानों का सांस्कृतिक स्वर्णकाल था। उन्होंने 'हरिकेली' नामक संस्कृत नाटक लिखा, जो भारवि के 'किरातार्जुनीयम्' पर आधारित है। विद्वानों के आश्रयदाता होने के कारण उन्हें 'कवि बांधव' (कटि बन्धु) भी कहा जाता था। उन्होंने टोंक जिले में बीसलपुर नगर बसाया और वहाँ एक विशाल बाँध (बीसलसागर) का निर्माण करवाया, जो आज भी राजस्थान की एक महत्वपूर्ण पेयजल परियोजना है।

प्रश्न: **70**

सही उत्तर: **B**

व्याख्या: 1311 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने जालौर पर विजय प्राप्त की और उसका नाम 'जलालाबाद' रखा। यह भी सत्य है कि दुर्ग के पतन में दहिया बीका का विश्वासघात एक कारण था। हालांकि, जलालाबाद नाम रखना विजय का परिणाम था, न कि विश्वासघात का प्रत्यक्ष कारण। खिलजी द्वारा विजित क्षेत्रों के नाम बदलना (जैसे चित्तौड़ का खिज्राबाद, सिवाना का खैराबाद) उसकी साम्राज्यवादी नीति का हिस्सा था।

प्रश्न: **71**

सही उत्तर: **D**

व्याख्या: चौहानों की विभिन्न शाखाओं के संस्थापक महत्वपूर्ण हैं। शाकम्भरी शाखा के वासुदेव, अजमेर के अजयराज और रणथंभौर के गोविंदराज (1194 ई.) थे। विकल्प D असंगत है क्योंकि जालौर की चौहान शाखा (सोनगरा शाखा) के संस्थापक कीर्तिपाल चौहान (कित्तू) थे, जिन्होंने 1181-82 ई. में जालौर को परमारों से जीतकर वहां चौहान सत्ता स्थापित की थी। कान्हड़देव इस वंश के अंतिम प्रतापी शासक थे।

प्रश्न: **72**

सही उत्तर: **C**

व्याख्या: यह प्रसिद्ध उक्ति हम्मीर देव चौहान के उस हठ को दर्शाती है जिसके कारण उन्होंने शरणागत मुहम्मद शाह को सौंपने के बजाय युद्ध और मृत्यु को चुना। 'केसरिया' और 'जौहर' की यह परंपरा हम्मीर के नैतिक मूल्यों और उनकी राजपूत आन-बान की रक्षा के संकल्प को प्रमाणित करती है। निष्कर्ष 1 और 2 दोनों सही हैं क्योंकि यह उक्ति न केवल एक कविता है बल्कि रणथंभौर के ऐतिहासिक पतन और वीरता की परिचायक है।

प्रश्न: **73**

सही उत्तर: **D**

व्याख्या: आबू के दिलवाड़ा मंदिर जैन स्थापत्य कला के शिखर माने जाते हैं। विमल शाह, जो गुजरात के चालुक्य राजा भीमदेव के मंत्री थे, ने 1031 ई. में प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ को समर्पित 'विमल वसही' मंदिर बनवाया। इसी तरह, 1230 ई. में वस्तुपाल और तेजपाल ने 22वें तीर्थंकर नेमिनाथ के लिए 'लूण वसही' मंदिर बनवाया। इन मंदिरों के निर्माण में परमार काल की उत्कृष्ट कला और आबू के स्थानीय शासकों का संरक्षण प्रमुख था।

प्रश्न: **74**

सही उत्तर: **A**

व्याख्या: 1191 ई. में तराइन के मैदान में हुए प्रथम युद्ध में पृथ्वीराज चौहान III ने मुहम्मद गौरी को बुरी तरह पराजित किया था। गौरी घायल होकर युद्ध मैदान से भाग गया था। इस जीत का मुख्य कारण राजपूत सेना की पारंपरिक श्रेष्ठता और पृथ्वीराज का सुदृढ़ नेतृत्व था। हालांकि, पृथ्वीराज ने भागती हुई तुर्क सेना का पीछा न करके एक सामरिक भूल की थी, जिसका परिणाम अगले वर्ष तराइन के द्वितीय युद्ध में भुगतना पड़ा।

प्रश्न: **75**

सही उत्तर: **C**

व्याख्या: पृथ्वीराज III को 'राय पिथौरा' और 'दल पुंगल' (विश्व विजेता) कहा जाता था। विग्रहराज IV को उनकी साहित्यिक अभिरुचि के कारण 'कवि बांधव' कहा गया। विकल्प C गलत है क्योंकि 'विषम घाटी पंचानन' (विकट युद्धों में सिंह के समान) की उपाधि मेवाड़ के राणा हम्मीर (सिसोदिया वंश) की थी, न कि रणथंभौर के हम्मीर देव चौहान की। रणथंभौर के हम्मीर को 'हठी हम्मीर' के नाम से जाना जाता है।

प्रश्न: **76**

सही उत्तर: **C**

व्याख्या: अजयराज द्वारा अपनी रानी सोमलेखा के नाम के सिक्के चलाना राजस्थान के इतिहास में एक अनूठा उदाहरण है। यह महिलाओं के राजनैतिक और आर्थिक अधिकारों की ओर संकेत करता है। साथ ही, अजयराज ने 1113 ई. में अजयमेरु (अजमेर) को बसाकर उसे सुरक्षित राजधानी बनाया और सिक्कों के माध्यम से व्यापार को सुदृढ़ किया। अतः दोनों निष्कर्ष इन सिक्कों के ऐतिहासिक और सामाजिक महत्व को सही रूप में स्पष्ट करते हैं।

प्रश्न: **77**

सही उत्तर: **B**

व्याख्या: मालवा के परमार राजा भोज न केवल एक महान विजेता थे बल्कि कला और विद्या के भी पारखी थे। उन्होंने चित्तौड़गढ़ में 'त्रिभुवन नारायण मंदिर' बनवाया। 'पृथ्वी परमारों की है' उनका सुप्रसिद्ध नारा था। विकल्प 2 गलत है क्योंकि सरस्वती कंठाभरण नामक पाठशाला की स्थापना भोज ने धार (मालवा) में की थी, जबकि अजमेर वाली पाठशाला की स्थापना चौहान शासक विग्रहराज **IV** ने की थी।

प्रश्न: **78**

सही उत्तर: **A**

व्याख्या: बिजोलिया शिलालेख चौहानों के मूल स्थान (सपादलक्ष) और उनकी वंशावली की जानकारी देने वाला सबसे प्रामाणिक अभिलेख है। यह शिलालेख पार्श्वनाथ मंदिर के पास उत्कीर्ण है। इसमें चौहानों को ब्राह्मण बताया गया है, जो उनके आर्य मूल की पुष्टि करता है। साथ ही, यह प्राचीन भौगोलिक नामों जैसे जाबालिपुर (जालौर), शाकम्भरी (सांभर) और नयना (नारनौल) की जानकारी देता है, जो इतिहास लेखन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

प्रश्न: **79**

सही उत्तर: **D**

व्याख्या: तराइन के युद्धों की जानकारी के लिए 'पृथ्वीराज रासो' और 'पृथ्वीराज विजय' प्राथमिक हिंदू स्रोत हैं। तुर्क पक्ष का विवरण हसन निजामी की 'ताज-उल-मासिर' और मिन्हास-उस-सिराज की 'तबकात-ए-नासिरी' से मिलता है। विकल्प D गलत है क्योंकि 'कुवलयमाला' की रचना 778 ई. में उद्योतन सूरी ने की थी, जो प्रतिहार काल से संबंधित है, न कि तराइन के युद्धों (चौहान काल) से।

प्रश्न: **80**

सही उत्तर: **D**

व्याख्या: 1311 ई. में जालौर का पतन दहिया राजपूत बीका के विश्वासघात के कारण हुआ था। उसने खिलजी को दुर्ग के कच्चे हिस्से (जहाँ दीवारों में दरारें थीं) की जानकारी दे दी थी। कान्हड़देव प्रबंध के अनुसार, जब बीका की पत्नी को यह पता चला, तो उसने तुरंत अपने गद्दार पति की हत्या कर दी और राजा को सूचित किया। यह घटना राजपूती नैतिकता और देशप्रेम के उस सर्वोच्च आदर्श को दर्शाती है जहाँ राष्ट्र का हित परिवार से ऊपर होता है।

प्रश्न: **81**

सही उत्तर: **D**

व्याख्या: महाराणा कुंभा मेवाड़ के सबसे महान विद्यानुरागी शासक थे। उन्होंने 'गीत गोविंद' की व्याख्या हेतु 'रसिक प्रिया' टीका लिखी और 'संगीत राज' जैसा वृहद् ग्रंथ रचा। 'संगीत राज' के पाँच भाग (पाठ्य, गीत, वाद्य, नृत्य और रस रत्नकोश) संगीत शास्त्र का आधार माने जाते हैं। 1437 ई. के सारंगपुर युद्ध में मालवा के सुल्तान को हराने के उपलक्ष्य में उन्होंने विजय स्तंभ का निर्माण करवाया, जिसे 'कीर्ति स्तंभ' भी कहा जाता है। यह भगवान विष्णु को समर्पित है।

प्रश्न: **82**

सही उत्तर: **D**

व्याख्या: हल्दीघाटी (1576) के बाद महाराणा प्रताप ने खुले युद्ध के बजाय अरावली की पहाड़ियों में रहकर छापामार युद्ध नीति अपनाई। 1582 ई. में दिवेर की जीत ने मेवाड़ की मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया, जिसे जेम्स टॉड ने 'मेवाड़ का मैराथन' कहा। प्रताप ने अपने अंतिम दिनों में चावण्ड को राजधानी बनाया, जहाँ 'चावण्ड चित्रकला शैली' का जन्म हुआ। उन्होंने यहाँ चामुंडा माता मंदिर का भी निर्माण करवाया। ये सभी तथ्य प्रताप के संघर्षशील जीवन की सफलता को रेखांकित करते हैं।

प्रश्न: **83**

सही उत्तर: **A**

व्याख्या: राणा सांगा ने बाबर के विरुद्ध 'पाती पेरवण' (पत्र भेजकर आमंत्रित करना) की प्राचीन परंपरा को पुनर्जीवित किया। इसके तहत मारवाड़ के मालदेव, आमेर के पृथ्वीराज, बीकानेर के कल्याणमल और मेवात के हसन खाँ मेवाती एक ध्वज के नीचे आए। कथन 3 गलत है क्योंकि इब्राहिम लोदी को सांगा ने खातोली और बाड़ी के युद्धों में स्वयं पराजित किया था। खानवा का संघर्ष दिल्ली सल्तनत के लिए नहीं, बल्कि भारत में राजपूत वर्चस्व बनाम मुगल सत्ता के लिए था।

प्रश्न: **84**

सही उत्तर: **D**

व्याख्या: मेवाड़ का स्थापत्य कुंभा के काल में अपनी पराकाष्ठा पर था। कुंभलगढ़ दुर्ग का निर्माण वास्तुकार 'मंडन' की देखरेख में हुआ, जिसकी 36 किमी लंबी दीवार चीन की दीवार के बाद विश्व की दूसरी सबसे लंबी दीवार मानी जाती है। विजय स्तंभ की नौ मंजिलों पर अनगिनत मूर्तियाँ होने के कारण इसे मूर्तिकला का खजाना कहा जाता है। मेवाड़ के 84 में से 32 दुर्गों का निर्माण कुंभा द्वारा करवाया जाना उनके सामरिक विजन और वास्तु प्रेम का प्रमाण है।

प्रश्न: **85**

सही उत्तर: **B**

व्याख्या: राव जोधा ने मेहरानगढ़ दुर्ग की नींव करणी माता के हाथों रखवाई थी, जो मारवाड़ का सामरिक केंद्र बना। आंवल-बांवल की संधि (1453) जोधा और मेवाड़ के राणा कुंभा के मध्य हुई थी, जिससे लंबे समय से चले आ रहे विवाद का अंत हुआ और सीमा निर्धारण हुआ। दोनों कथन ऐतिहासिक रूप से सत्य हैं, लेकिन संधि करना दुर्ग निर्माण का प्रत्यक्ष 'कारण' नहीं है; संधि ने शांति प्रदान की जिससे निर्माण संभव हुआ।

प्रश्न: **86**

सही उत्तर: **C**

व्याख्या: राव मालदेव मारवाड़ के अत्यंत महत्वाकांक्षी शासक थे। उन्होंने अपने बाहुबल से 52 युद्ध जीते और 58 परगनों पर अधिकार किया। फारसी इतिहासकारों ने उन्हें 'हिंदुस्तान का सबसे शक्तिशाली शासक' कहा। कारण (R) असत्य है क्योंकि गिरी-सुमेल (1544) के युद्ध में मालदेव ने सीधे भाग नहीं लिया था; उनके सेनापति जेता और कूँपा ने अदम्य साहस दिखाया था। शेरशाह सूरी छल से जीता था और उसने मालदेव को पराजित नहीं किया था।

प्रश्न: **87**

सही उत्तर: **A**

व्याख्या: राव चंद्रसेन राजस्थान के प्रथम शासक थे जिन्होंने मुगलों की अधीनता का डटकर विरोध किया और महलों का सुख त्याग कर पहाड़ों (भाद्राजूण, सिवाना) को अपना ठिकाना बनाया। उन्होंने 1570 ई. के नागौर दरबार में भी अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की। प्रताप ने भी बाद में इसी नीति का अनुसरण किया, इसलिए चंद्रसेन को 'प्रताप का मार्गप्रदर्शक' या 'भूला-बिसरा राजा' (The Forgotten Hero) कहा जाता है। कथन और कारण दोनों सत्य और सटीक हैं।

प्रश्न: **88**

सही उत्तर: **C**

व्याख्या: महाराजा जसवंत सिंह I मुगल दरबार के सबसे शक्तिशाली हिंदू सरदार थे। औरंगजेब उनसे भयभीत रहता था। जब 1678 ई. में जमरूद (अफगानिस्तान) में उनकी मृत्यु हुई, तब औरंगजेब ने खुशी में कहा था कि "आज धर्म विरोध (कुफ्र) का दरवाजा टूट गया।" कारण (R) गलत है क्योंकि जसवंत सिंह ने मुगलों के कई महत्वपूर्ण सैन्य अभियानों (जैसे कंधार और दक्षिण भारत) का सफल नेतृत्व किया था, हालांकि उनके संबंध औरंगजेब से तनावपूर्ण रहे थे।

प्रश्न: **89**

सही उत्तर: **C**

व्याख्या: सवाई जयसिंह II को 'चाणक्य' और 'वैज्ञानिक राजा' की उपाधि दी गई है। उन्होंने हिंदू खगोल विज्ञान को पुनर्जीवित करने के लिए पाँच स्थानों पर वेधशालाएँ बनवाईं। उन्होंने नक्षत्रों की गणना हेतु 'जीज मुहम्मदशाही' सारणी और 'जयसिंह कारिका' नामक ज्योतिष ग्रंथ की रचना की। जयपुर का जंतर-मंतर अपनी 'सम्राट यंत्र' (सबसे बड़ी धूप घड़ी) के कारण विश्व विख्यात है। ये दोनों निष्कर्ष उनकी वैज्ञानिक दृष्टि और खगोलीय ज्ञान की प्रामाणिक पुष्टि करते हैं।

wincompete

प्रश्न: **90**

सही उत्तर: **A**

व्याख्या: मिर्जा राजा जयसिंह एक चतुर रणनीतिकार थे। औरंगजेब ने उन्हें दक्षिण में शिवाजी को नियंत्रित करने के लिए भेजा था। जयसिंह ने घेराबंदी कर शिवाजी को पुरंदर की संधि (1665) के लिए राजी किया, जिसमें शिवाजी को अपने 23 दुर्ग मुगलों को देने पड़े। निष्कर्ष 2 गलत है क्योंकि यह मित्रता स्थाई नहीं रही; शिवाजी आगरा से भाग निकले और पुनः मुगलों के विरुद्ध संघर्ष प्रारंभ कर दिया। अतः केवल निष्कर्ष 1 ही तर्कसंगत है।

प्रश्न: **91**

सही उत्तर: **C**

व्याख्या: मानसिंह I अकबर के 'नवरत्नों' में से एक थे और उन्हें 7000 का सर्वोच्च मनसब प्राप्त था। उन्होंने पूर्वोत्तर भारत में मुगलों का झंडा बुलंद किया। बंगाल अभियान के दौरान वे 'शीला माता' की मूर्ति आमेर लाए। उन्होंने आमेर के महलों में मुग़ल और हिंदू स्थापत्य का समन्वय किया। काबुल से वे कलात्मक दरवाजे और आभूषण निर्माण की तकनीक लाए। अतः दोनों निष्कर्ष मानसिंह के काल में हुए सांस्कृतिक और राजनीतिक परिवर्तनों को सही दर्शाते हैं।

प्रश्न: **92**

सही उत्तर: **A**

व्याख्या: जयपुर भारत का पहला योजनाबद्ध शहर माना जाता है। विद्याधर भट्टाचार्य ने इसे नौ वर्गों (ग्रिड प्रणाली) में विभाजित किया था। सवाई जयसिंह ने इसे एक व्यापारिक केंद्र के रूप में विकसित किया और विभिन्न देशों के व्यापारियों को यहाँ बसने के लिए आमंत्रित किया। निष्कर्ष 2 पूर्णतः गलत है क्योंकि जयपुर अपनी स्थापना से ही हस्तशिल्प और व्यापार का विश्व प्रसिद्ध केंद्र रहा है, न कि केवल एक सैन्य किला।

प्रश्न: **93**

सही उत्तर: **C**

व्याख्या: 'लाटा' और 'कुंता' भू-राजस्व निर्धारण की प्राचीन विधियाँ थीं। 'सायरी' चुंगी कर को कहा जाता था। विकल्प C असंगत है क्योंकि 'गूगरी' वास्तव में बीज के बदले लिया जाने वाला अनाज था, न कि नकद भूमि कर। नकद रूप में लिए जाने वाले भूमि कर को मध्यकाल में 'नगद' या 'जब्ती' कहा जाता था। राजस्व शब्दावली का ज्ञान परीक्षाओं में प्रशासनिक व्यवस्था को समझने के लिए अनिवार्य है।

प्रश्न: **94**

सही उत्तर: **C**

व्याख्या: मध्यकाल में 'खालसा' प्रत्यक्ष राजकीय भूमि थी और 'शासन' दान में दी गई कर-मुक्त भूमि। 'जागीर' सेवाओं के बदले दी जाती थी। विकल्प C असंगत है क्योंकि 'भोम' भूमि वह थी जो उन लोगों को दी जाती थी जो गाँव की रक्षा या अन्य सैन्य सेवाओं में शहीद होते थे या विशिष्ट वीरता दिखाते थे। जागीरदारों द्वारा अपने व्यक्तिगत खर्च के लिए रखी गई भूमि को 'छूट' या 'निजी जोत' कहा जाता था।

प्रश्न: **95**

सही उत्तर: **D**

व्याख्या: 'रेख' जागीर की वार्षिक आय थी और 'चाकरी' सैन्य दायित्व। 'तलवार बंधाई' उत्तराधिकार शुल्क था जिसे मेवाड़ में 'कैद खालसा' और मारवाड़ में 'हुक्मनामा' कहते थे। विकल्प D असंगत है क्योंकि 'जभाणी' कोई शोक कर नहीं था, बल्कि यह सिंचाई पर लगने वाला कर था। राजा की मृत्यु पर कोई विशेष कर सामंतों से नहीं लिया जाता था, बल्कि सामंत स्वयं शोक की रस्में निभाते थे।

wincompete

प्रश्न: **96**

सही उत्तर: **D**

व्याख्या: 'खड़ड़ा' और 'सिंघोती' कृषि और पशुपालन से जुड़े कर थे। 'त्याग' कर चारण-भाटों को दिया जाता था। विकल्प D असंगत है क्योंकि 'इजारा' कोई उपहार नहीं था, बल्कि यह राजस्व वसूली की एक पद्धति थी जिसमें सबसे ऊंची बोली लगाने वाले को कर वसूली का ठेका दिया जाता था। राजकीय उत्सवों पर प्रजा द्वारा दी जाने वाली भेंट को 'न्योता' या 'नजराना' कहा जाता था।

प्रश्न: **97**

सही उत्तर: **D**

व्याख्या: मध्यकालीन राजस्थान का प्रशासन मुगलों के समान ही सुव्यवस्थित था। प्रधान (दीवान) राज्य का दूसरा सबसे शक्तिशाली व्यक्ति होता था। बख्शी का कार्य केवल वेतन देना नहीं, बल्कि सेना का हुलिया रखना और रसद का प्रबंधन करना भी था। खानसामा राजमहल की सुरक्षा और रसद का उत्तरदायी था। इन पदों के माध्यम से राजा राज्य पर प्रभावी नियंत्रण रखते थे। ये तीनों कथन प्रशासनिक ढांचे की सही व्याख्या करते हैं।

प्रश्न: **98**

सही उत्तर: **A**

व्याख्या: राजस्थान की सामंती व्यवस्था 'रक्त संबंध' (Blood Relationship) पर टिकी थी। सामंत राजा को अपना स्वामी न मानकर अपना अग्रज या 'बड़ा भाई' मानते थे। उनके बीच का संबंध 'स्वामी-सेवक' का न होकर 'भाईचारे' का था। कर्नल टॉड ने इसे यूरोपीय सामंतवाद के समान माना, लेकिन वास्तव में यह कुलीय भावना पर आधारित एक संघीय ढांचा था जहाँ राजा 'समान श्रेणी वालों में प्रथम' होता था। कथन और कारण दोनों सत्य हैं।

प्रश्न: **99**

सही उत्तर: **C**

व्याख्या: 'परगना' प्रशासन की एक महत्वपूर्ण कड़ी थी। हाकिम की नियुक्ति स्वयं राजा करता था। हाकिम का मुख्य कार्य कानून व्यवस्था बनाए रखना और राजस्व वसूली सुनिश्चित करना था। वह परगने का 'छोटा राजा' माना जाता था। गाँव प्रशासन की सबसे छोटी इकाई थी, जहाँ 'पटवारी' और 'चौधरी' हाकिम की सहायता करते थे। अतः दोनों निष्कर्ष परगना प्रशासन की महत्ता और कार्यप्रणाली को स्पष्ट रूप से परिभाषित करते हैं।

प्रश्न: **100**

सही उत्तर: **D**

व्याख्या: जैसलमेर रियासत में 'तलवार बंधाई' कर नहीं लिया जाना उसकी एक विशिष्ट परंपरा थी। बिजोलिया में 84 प्रकार की 'लाग-बाग' और 'चंवरी कर' (पुत्री के विवाह पर कर) आंदोलनों का आधार बने। विकल्प D असंगत है क्योंकि 'पट्टा रेख' वह अनुमानित आय थी जो जागीर के पट्टे पर लिखी जाती थी, न कि किसान द्वारा चुकाया गया वास्तविक लगान। किसान द्वारा चुकाए गए वास्तविक राजस्व को 'भरत रेख' कहा जाता था।

wincompete